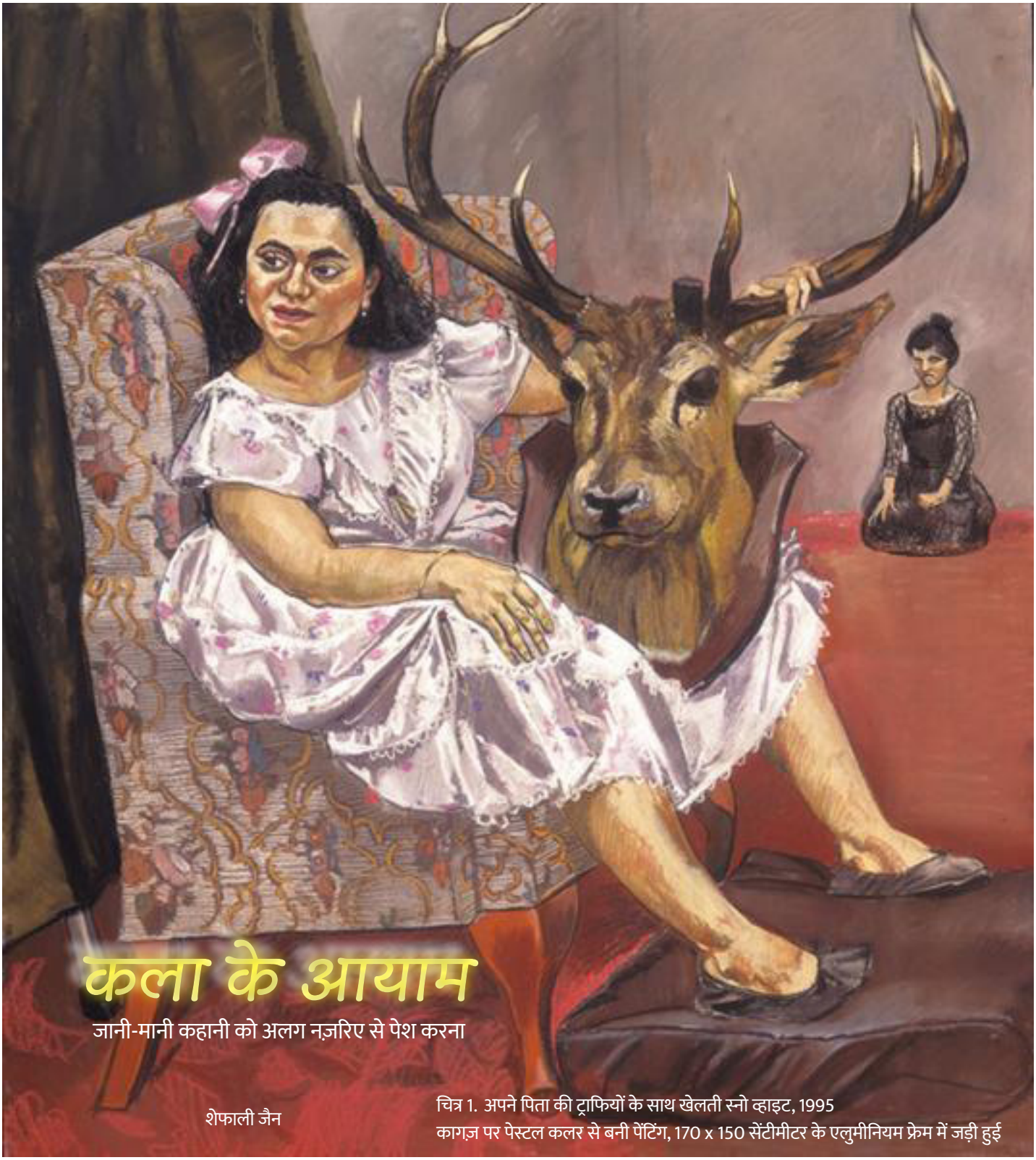

कला के आयाम

जानी-मानी कहानी को अलग नज़रिए से पेश करना

शेफाली जैन

चित्र 1. अपने पिता की ट्राफियों के साथ खेलती स्नो व्हाइट, 1995
कागज़ पर पेस्टल कलर से बनी पेंटिंग, 170 x 150 सेंटीमीटर के एलुमीनियम फ्रेम में जड़ी हुई

कहानियाँ सुनना लगभग हम सबको अच्छा लगता है। बचपन से ही हम दादी-नानी, दाई, दीदी से कहानियाँ सुनते आए हैं। हम किताबों में भी बहुत कहानियाँ पढ़ते आए हैं। पर पता नहीं क्यों एक उम्र के बाद कहानियाँ हमारी किताबों से गायब होने लगती हैं। या फिर वे केवल साहित्य जैसे विषय में पढ़ाई जाती हैं। पर कला का कहानियों से काफी लम्बा और गहरा ताल्लुक रहा है।

कला और कहानियों का नाता

बहुत सारे पेंटिंग, म्यूरल और रिलीफ वर्क का विषय कहानियाँ ही रही हैं। अजन्ता के म्यूरल्स में जातक कथाएँ उकेरी हुई हैं, तो मुगल मिनिएचर पेंटिंग्स में राजपाट और हम्ज़ानामा जैसी रोमांचक कहानियाँ चित्रित हैं। हम्पी के मन्दिरों में शिव-पार्वती की कहानियाँ मढ़ी हुई हैं। कहानियाँ समकालीन कला में भी हैं। जैसे आम लोगों की कहानियाँ सुधीर पटवर्धन की कला में, रोमांच और साहस की कहानियाँ सुपरहीरो कॉमिक्स में या फिर लोककथाएँ जापानी एनीमे में।

तो ज़ाहिर है कहानी का कला से बहुत करीबी नाता है। पर इन सब अलग-अलग तरह की कहानियों में एक खास तरह की कहानी है जिसे ऐडैप्टेशन (रूपान्तर) कहते हैं। यानी किसी जानी-मानी कहानी को एक अलग नज़रिए से दोबारा पेश करना। इस तरह का ऐडैप्टेशन पेंटिंग में भी हुआ है। ऐडैप्टेशन का इस्तेमाल करने वाले कलाकारों में से मेरी पसन्दीदा कलाकार हैं – पौला रेगो। तो चलो आज रेगो के एक चित्र ऐडैप्टेशन के बारे में साथ में सोचें।

स्नो व्हाइट की कहानी और रेगो का ऐडैप्टेशन

चित्र 1 का शीर्षक है – 'स्नो व्हाइट विथ हर फादर्स ट्रॉफीज़'। यानी स्नो व्हाइट अपने पिता की ट्रॉफियों के साथ। स्नो व्हाइट की कहानी तो तुमने सुनी होगी। स्नो व्हाइट अपने पिता और सौतेली माँ के साथ रहती थी। सौतेली माँ के पास एक जादुई शीशा था। जब भी वह उससे पूछती कि दुनिया में कौन सबसे सुन्दर है, तो शीशा स्नो व्हाइट का ही नाम लेता। इस पर गुस्सा होकर स्नो व्हाइट की सौतेली माँ उसे जंगल में मरने के लिए छोड़ आती है। पर वापस आकर जब शीशा फिर भी स्नो व्हाइट का नाम लेता है तो उसे पता चलता है कि स्नो व्हाइट अब भी ज़िन्दा है।

स्नो व्हाइट जंगल में सात नए दोस्तों के साथ रहने लगती है। सौतेली माँ भेस बदलकर वहाँ पहुँचती है और स्नो व्हाइट को एक ज़हरीला सेब खिला देती है। इससे स्नो व्हाइट सदा के लिए एक गहरी नींद में सो जाती है। अन्त में एक राजकुमार आकर उसे चूमकर उसकी नींद से वापस बाहर ले आता है।

तुमने इस कहानी को कई बार सुना या देखा होगा। कभी किसी किताब में या फिर डिज़्नी कार्टून पर। डिज़्नी की स्नो व्हाइट बिलकुल नाज़ुक, गोरी और बेचारी-सी लड़की है। उसकी सौतेली माँ आसानी-से उसे ठग लेती है और ज़हरीला सेब खिलाकर सुला देती है। और जब तक राजकुमार आकर उसे बचा नहीं लेता, तब तक वह यूँही बेसहारा सोई रहती है।

पर पौला रेगो के ऐडैप्टेशन में स्नो व्हाइट बिलकुल अलग है। रेगो की पेंटिंग में जो स्नो व्हाइट है वह डिज़्नी प्रिंसेस की तरह नाज़ुक नहीं, बल्कि काफी तगड़े शरीर वाली है। वह एक सोफे पर धड़ल्ले से पैर फैलाए बैठी है। उसे हम दर्शकों में कोई दिलचस्पी नहीं। वह कहीं और ही देख रही है। जैसे हमें कह रही हो कि हम उसे घूरना बन्द करें और अपना रास्ता नापें!! उसकी गोद में एक हिरण का सिर है। बिलकुल वैसा जैसा हम पुराने महलों में दीवार पर टँगा देखते हैं – किसी राजा के शिकार का भूसे से भरा पुतला। स्नो व्हाइट के चेहरे पर सन्तुष्टि और सफलता झलक रहे हैं। पेंटिंग का शीर्षक बताता है कि यह सिर उसके पिता की ट्रॉफियों (किसी भी खेल जैसे शिकार में विजय पाने का कोई चिह्न) में से एक है, पर स्नो व्हाइट को देखकर ऐसा लग रहा है मानो वह खुद शिकार करके बस अभी उसे यहाँ लाई है। पीछे दीवार से सटकर एक औरत बैठी है। क्या वह स्नो व्हाइट की सौतेली माँ है? वह काफी नाखुश लग रही है और काफी छोटी-सी और गर्राई हुई भी।

चित्र 2. उत्तरी लंदन, कैमडेन के अपने स्टूडियो में पौला रेगो, © एंटोनियो ऑल्मोस / आईविन

रेगो की पेंटिंग्स में औरतों का चित्रण

हम सबके मिज़ाज और शौक काफी अलग-अलग, मिले-जुले और मज़ेदार हैं! इनका हमारे जेंडर से कोई लेना-देना नहीं। हमारे आसपास बहुत सारे अलग-अलग किस्म के शरीर भी हैं — पतले-मोटे, लम्बे-छोटे, नाज़ुक, बलवान, लचीले, झुके हुए, गोरे, गेंहुएँ, काले। इनकी काबिलियत किसी मापदण्ड पर नहीं तौली जा सकती।

पौला रेगो पुर्तगाल में एक कैथोलिक (एक ईसाई सम्प्रदाय) परिवार में पली-बढ़ीं। उस समय पुर्तगाल कट्टर कैथोलिक राष्ट्र था। ऐसे में औरतों के लिए बहुत सारी बन्दिशें थीं। उन्हें ज़्यादा पढ़ाई करने और अपना करियर बनाने के अवसर नहीं दिए जाते थे। शादी करना और बच्चे पैदा कर उनका ख्याल रखना ही उनका काम बताया जाता था। पर पौला के पिता उन्हें काफी प्रोत्साहन देते रहे और उनकी अच्छी पढ़ाई करवाई। कॉलेज पढ़ने लंदन भी भेजा।

पौला की ज़्यादातर पेंटिंग्स औरतों की कहानियाँ दर्शाती हैं। ये औरतें अक्सर सशक्त, तगड़ी और आत्मविश्वासी दिखती हैं। रेगो की पेंटिंग्स में गठीले बदन वाली, चेहरे पर उम्र का तकाज़ा लिए जो औरतें हैं वे देखने वालों में खलबली पैदा कर देती हैं। ज़्यादातर लोगों के दिमाग में औरतों की जो छवि बसा दी गई है, उससे काफी अलग हैं ये। ऐसी औरतों को हम जानते भी हैं या रोज़ देखते भी हैं पर ये पेंटिंग्स में कम दिखाई गई हैं। सोचने की बात है ना! आखिर ऐसा क्यों?

हमारे आसपास बहुत सारी औरतें हैं जो बेखौफ हैं, समर्थ हैं और जो खुद की और दूसरों की सुरक्षा और देखरेख करती आई हैं। बहुत सारे मर्द हैं जो शर्मीले हैं, जो घर के कामों में या कला में दिलचस्पी रखते हैं ना कि औरतों के लिए रक्षक और राजकुमार या फिर हीरो बनने में। हम सबके मिज़ाज और शौक काफी अलग-अलग, मिले-जुले और मज़ेदार हैं! इनका हमारे जेंडर से कोई लेना-देना नहीं। हमारे आसपास बहुत सारे अलग-अलग किस्म के शरीर भी हैं – पतले-मोटे, लम्बे-छोटे, नाज़ुक, बलवान, लचीले, झुके हुए, गोरे, गेंहुएँ, काले। इनकी काबिलियत किसी मापदण्ड पर नहीं तौली जा सकती।

हम सब एक-दूसरे के सहारे और साथ पर निर्भर हैं। हम सब स्वभाव और शरीर

से मिले-जुले हैं। पर क्या हमारी कहानियाँ यह बात ठुकराती हैं? अब जब भी तुम पेंटिंग या चित्र कहानियाँ देखो तो इस बात पर गौर करना।

कहानियाँ (लिखित या चित्रित) दुनिया परखने और कल्पित करने का बहुत खास साधन हैं। कहानीकार (चाहे वे लेखक हों या फिर पेंटर) अक्सर ऐडैप्टेशन या फिर कहानी कहने की किसी और तकनीक के ज़रिए हमें अपने आप को, दुनिया को बारीकी से देखने-समझने और नया रूप दे पाने का सहारा देते हैं। पौला रेगो का स्टूडियो अपने आप में कहानियों का पिटारा है। चित्र 2 व 3 में तुम देख सकते हो कि रेगो किस तरह से अपनी कहानियों के पात्रों की कल्पना करती हैं। वे अलग-अलग किस्म और आकार की गुड़िया या पपेट्स, पोशाक, नकाब वगैरह स्टूडियो में जमा करती हैं और इनमें से निकलते हैं कई दिलचस्प किरदार जिन्हें वे अपनी पेंटिंग्स में उतारती हैं।

साइंस फिक्शन कहानियों की जानी-मानी लेखिका उर्सुला ले गुइन कहानी में कल्पना की शक्ति के बारे में लिखती हैं। वे कहती हैं कि अगर वे अपनी किताबों में द्विलिंगता (bisexuality) के बारे में लिखती हैं तो इसका मतलब ये नहीं कि वे भविष्यवाणी कर रही हैं कि हमारा आने वाला कल द्विलिंगी है। बल्कि वे साइंस फिक्शन के ज़रिए यह कह रही हैं कि अगर हम खुद को दिन के किसी अनोखे पल या फिर किसी खास मौसम में बारीकी से देखेंगे तो पाएँगे कि हम सब पहले से ही द्विलिंगी, मिले-जुले और दिलचस्प हैं!

रेगो खुद लिखती हैं, "The picture allows you to do all sorts of forbidden things. And that is why you do pictures." यानी, "चित्र हमें वे बातें कहने का मौका देते हैं जिन्हें दबाया गया है। और इसीलिए हम चित्र बनाते भी हैं।"

अफसोस है कि रेगो अब हमारे बीच नहीं रहीं। इस साल जून महीने में वे चल बसीं। पर उनकी पेंटिंग्स हमारे बीच अब भी हैं और वे बताती हैं कि रेगो कितनी गज़ब कहानीकार थीं।

चित्र 3. गॉटियर डीब्लांड द्वारा ली गई तस्वीर, 17 दिसम्बर, 2021